Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 6
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

हाशिए का समाज और भगवानदास मोरवाल की कहानियों में सामाजिक-संघर्ष

आमिर खान
शोधार्थी जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली

Article Info

Publication Issue :
November-December-2023
Volume 6, Issue 6

Page Number : 131-134

Article History
Received : 02 Dec 2023
Published : 21 Dec 2023

सारांश: भारत की सामाजिक संरचना में समय-समय पर बहुत बदलाव आये हैं। देश के अलग-अलग राज्यों की अलग-अलग भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं। अलग-अलग संस्कृति के लोग निवास करते हैं। इसलिए ही हर धर्म के लोगों की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आदि परिस्थितियाँ एक जैसी नहीं हैं। अत: कुछ समुदाय उच्च वर्ग में और कुछ समुदाय निम्न वर्ग में आते है। इन्हीं में उत्पन्न होता है एक अलग समाज जिसे हम 'हाशिए के समाज' के नाम से जानते हैं। अत: भगवानदास मोरवाल की कहानियों में हाशिए के समाज का सामाजिक संघर्ष प्रमुख है।

मूलशब्द: सामाजिक संरचना, हाशिए का समाज, स्त्री, सामाजिक संघर्ष इत्यादि।

भारत में जाति व्यवस्था, धर्म एवं समाज, राजनीति आदि के माध्यम से मनुष्य के जीवन को मुख्य रूप से विश्लेषित किया जा सकता है इसके माध्यम से दुनिया के किसी भी देश की सामाजिक संरचना को समझा जाता है। कार्य एवं आर्थिक जीवन के माध्यम से भारत में वर्ग विभाजन हुआ, जो जाहिर तौर पर उच्च और निम्न वर्ग को दर्शाता है। समाज में किसी भी व्यक्ति की क्या स्थिति है? उसका पता उसके कार्य से जोड़ दिया गया जिसके कारण ही उच्च वर्ग का वर्चस्व निम्न वर्ग पर हो गया जो किसी भी देश के विकास को बाधित करता है। सामाजिक स्तर और उसका विभेदीकरण करते हुए अनेकों समाजशास्त्रियों ने अपनी परिभाषाएं दी हैं जिनमें सर्वप्रथम फ्रांसीसी विचारक अगस्त कॉम्ट का नाम आता है। मैकाइवर, मैक्स वेबर, जॉनसन, बोगार्डस, आदि समाजशास्त्रियों ने अलग-अलग परिभाषाएं दीं लेकिन सभी ने माना है कि 'समाजशास्त्र केवल सामाजिक संबंधों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है।' मुख्य रूप से कहा जा सकता है कि समाज को समझने के लिए सामाजिक मूल्यों, सामाजिक क्रिया, सामाजिक अंतर्क्रिया और सामाजिक संबंधों को समझना अति आवश्यक है।

'सामाजिक मूल्य' मनुष्य के वे आदर्श हैं जिनके माध्यम से मनुष्य के आचरण का पता लगता है। मनुष्य का व्यवहार, गुण, सभ्यता आदि के माध्यम से ही जान पाते हैं कि उसके आदर्श कैसे हैं। जब भी दो समूहों के अच्छे और बुरे होने का फैसला करता है। सामाजिक मूल्य मुख्य रूप से हमारे संबंधों को संतुलित कर उन्हें मजबूत करते हैं।

हाशिए के समाज की जब हम बात करते हैं तो हमें पूरे भारत के भौगोलिक क्षेत्र पर अपनी नजर रखनी होगी। हर राज्य में हमें देखना होगा कि भारत की जातियाँ और समुदायों में किस तरह का विभेदीकरण हैं। हाशिए से तात्पर्य कहीं न कहीं वर्चस्व से है। प्राचीन काल से वर्चस्व की सत्ता की लड़ाई होती आ रही है। इस लड़ाई का अंत एक वर्ग को हाशिए पर धकेल दे रहा है, उसको नेस्तानाबूत कर दे रहा है। यही परम्परा आज भी पूरे विश्व में विद्यमान है इसका हल शायद ही कोई

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

बना हो, लेकिन हाशिए पर गए समुदायों और जनजातियों का संघर्ष निरंतर जारी है। यह कहना गलत न होगा इन सभी की मुख्य समस्या आर्थिक संघर्षों से जूझना है। हर देश के नागरिक को अपने मूल अधिकारों के लिए पूर्ण अधिकार है। हाशिए के समाज के लोगों की मूल समस्या अपने अधिकारों को प्राप्त करने की है।

हाशिए का समाज सदियों से प्रताड़ित और शोषित है। भारतीय समाज में आदिवासी, दलित, स्त्रियाँ, पसमांदा मुस्लिम और अल्पसंख्यक समुदाय हाशिए पर रहने को सदियों से मजबूर है। हाशिए के समाज की कुछ परिभाषाएँ विद्वानों ने दी हैं जिनमें कुछ निम्न हैं–

बजरंग भूषण के अनुसार– "हाशिए का समाज' से तात्पर्य एक ऐसे वर्ग से होता है जो किसी न किसी रोप में वंचना एवं वर्जनाओं का शिकार है। यह वंचना सामाजिक,राजनैतिक, आर्थिक, क़ानूनी, भाषायी,जेंडर या जाति आधारित किसी भी परकार की हो सकती है।"[1]

हरिराम मीणा के अनुसार– "किसी भी राष्ट्र– समाज के उन घटकों के सम्मिलित समाज को हाशिये का समाज कहा गया है, जो अगुआ तबके की तुलना में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक स्तर पर किन्हीं कारणों से पीछे रह गया है।"[2]

शम्भुनाथ के अनुसार– "खास समुदाय या दल जब अधिक सत्ता, प्रभाव और नियंत्रण रखता है, वह केंद्र कहा जाता है और जो अल्प सत्ता, प्रभाव या नियंत्रण वाला या बिल्कुल वंचित है, वह हाशिया है।"[3]

भगवानदास मोरवाल ने अपने कहानियों में विविध परंतु महत्त्वपूर्ण विषय लेकर अपनी प्रतिभा का परिचय प्रस्तुत किया है। सिला हुआ आदमी, सूर्यास्त से पहले, अस्सी मॉडल उर्फ सूबेदार, सीढ़ियाँ, माँ और उसका देवता, लक्ष्मण–रेखा, दस प्रतिनिधि कहानियाँ। उन्होंने 'भूकंप' एवं 'रंग–अबीर' कहानियाँ में तत्कालीन रथयात्रा के दौरान मेवात में उपजे साम्प्रदायिक भय को दृष्टिपथ में रखकर लिखी थीं। जो समकालीन कथा–साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। इस लेख में कुछ कहानियों की माध्यम से भगवानदास मोरवाल की कहानियों में सामाजिक संघर्ष का अध्ययन किया गया है।

भगवानदास मोरवाल की कहानियों में जब हम सामाजिक संघर्ष की बात करते हैं तो बख़ूबी उनकी सभी कहानियां इस स्तर पर खरी उतरती हैं। वरिष्ठ कथाकार मुकेश वर्मा इनकी कहानियों के बारे में लिखते हैं कि– "भगवानदास मोरवाल की कहानियों में स्पष्ट पक्षधरता है उन तमाम वर्गों के हक में जो सदियों से दमित, दलित और वंचित रहे हैं। वे अपने इस आशय को किन्हीं वैचारिक आवेगों के कारण नहीं, बल्कि ज़िन्दगी की तल्ख हकीकतों से पाया हुआ ऐसा मानते हैं जो एक संवेदनशील साहित्यकार को गहराई से आंदोलित करता है। अन्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था और उतने ही क्रूर धर्म–विधान के चलते पीड़ित समाज की कराह की जीवंत अभिव्यक्ति को अपने रचना–कर्म में महत्त्वपूर्ण रूप से लेखन करना इनके लिए बुनियादी साहित्यिक सरोकार है।"[4] सबसे स्पष्ट बात यह है कि इनकी कहानियों में सामाजिक दंश उन लोगों का ही है जो सदियों से हाशिए पर हैं लेकिन वे लगातार अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत हैं। वरिष्ठ आलोचक शंभु गुप्त लिखते हैं कि–"भगवानदास मोरवाल सिर्फ कहानियाँ लिखने के लिए कहानियाँ नहीं लिखते हैं, बल्कि अरसे तक मन–ही–मन किसी चिंता या समस्या से जूझते हुए अपने सामने उपस्थित यथार्थ या ऊपर–नीचे, आगे–पीछे, अंदर–बाहर प्राय: हर तरह से आकलन करते हुए घटनाओं और पात्रों को सुनिश्चित करते हैं। पहली नज़र में लगता है मोरवाल किसी समस्या को डील करने के मकसद से उसका कथात्मक निरूपण और आख्या कर रहे हैं। हालाँकि यहाँ किसी तरह की कोई साँचावद्धता या वैचारिक यांत्रिकता नहीं पाई जाती है। बल्कि कहना होगा कि साँचा बद्धता और वैचारिक यांत्रिकता से मोरवाल का दूर–दूर तक कोई संबंध नहीं। मोरवाल की सफलता और सृजनात्मकता इसी बात में है कि वैचारिकता या कहें कि विमर्शमूलकता घटनाओं और पात्रों के आपसी तनाव और संघर्ष से स्वत: यहाँ फूटती और पूरी कहानी को आलोकित करती नज़र आती है।"[5] मोरवाल की कहानियों का फलक सामाजिक संघर्ष से परिपूर्ण हैं जो मोरवाल की कहानियों को और ज्यादा महत्वपूर्ण

कर देता है। वर्तमान की सामाजिक समस्याओं से जोड़ते हुए उन्होंने कथा लेखन किया है जिनमें कहानियां बहुत ही महत्वपूर्ण हैं।

भगवानदास मोरवाल की कहानी 'अस्सी मॉडल उर्फ़ सूबेदार' कहानी का फलक बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस कहानी में एक सीधा-साधा अंगूठा टेक आदमी सूबेदार के सामाजिक संघर्ष को बख़ूबी देखा जा सकता है। सभी के लिए उपहास बना सूबेदार अस्सी मॉडल बन जाता है। सामाजिक घृणा किसी भी व्यक्ति को संघर्ष करे पर मजबूर कर देती हैं। इसी संदर्भ को दर्शाती यह कहानी बहुत महत्वपूर्ण है। ग्राम प्रधान यासीन का सूबेदार का मजाक बनाना और उसको लज्जित करना सूबेदार के लिए प्रेरणास्रोत है। एक संवाद में जो दिखाई देता है- "विधायक के जाते ही यासीन बेकाबू हो उठा था।
'लो भई, या गाँओं में अब एक और लीडर पैदा हो गया...अरे, घर में नहीं दाणे और अम्माँ चत्ती भुनाणे!'
यासीन के इस वाक्य पर वहाँ उपस्थित भीड़ ठहाका मार कर हँस पड़ी थी और अस्सी मॉडल, वह तो मानो जमीन में धँस गया था। जाते-जाते यासीन ने एक और जुमला दें मारा था अस्सी मॉडल के मुँह पर, 'अब या मुलक में ऐसा मोडल बी लीडरी करंगा, जाके घर की छान तो कव्वों ने तोड़ राखी है। अरे, यई सुकर मनाओ कि हिजड़े के छोरा न होंवें, नई तो वे वाहे चार-चाट के मार दें।'

अस्सी मॉडल की आँखों में खून उतर आया था यासीन की बात सुनकर लेकिन वह बोला कुछ नहीं। उसने यासीन की आँखों में आँखें डालकर जैसे ही कुछ कहना चाहा था कि यासीन ने उसे फिर धर-दबोचा, 'मेरे यार सूबेदार, या लीडरी में कुछ ना घरो है...जा, ढोर-डंगर चरा के अपने जीवाक पाल ले.... या अस्सी मोडल बनणा सू कोई फायदा ना है।"[6] इस बात पर ही सूबेदार ने नगीना गाँव के सभी बड़े लोगों को कर दिखाया कि समाज किस तरह से एक व्यक्ति को संघर्ष करने पर मजबूर कर देता है। सूबेदार गाँव का प्रधान बनकर दिखाता है जिससे यह जाहिर होता है कि मोरवाल ने ग्रामीण सामाजिक संघर्ष को बख़ूबी देखा और समझा है।

मोरवाल की 'लेकिन' कहानी में दहेज़ और स्त्री समस्या की सामाजिक संघर्ष को दिखाया है। समाज में स्त्री को केवल एक वस्तु की तरह इस्तेमाल किया जाता है। इतना ही नहीं इस कहानी की मुख्य स्त्री पात्र 'आयशा' अपने पति जुम्मे खां सरे जुल्म सहती है। समाज में स्त्री हर मोड़ पर संघर्ष करती दिखाई देती है ।

'महराब' कहानी की कथावस्तु भी बहुत ही महत्वपूर्ण हैं जिसमें आर्थिक तंगी के चलते एक परिवार को गाँव के दूसरे घर पर निर्भर होना पड़ता है। नत्थू और कलबत्ती कुम्हारी का एक ऐसा ही परिवार है जो गाँव के अन्य घरो पर निर्भर है। गाँव में जब किसी के यहाँ शादी होती है तो उनके यहाँ से मिलने वाला नेग और खाना ही उनके लिए अपना जीवन को गुजारने का जरिया है। जीवन जीने के लिए संघर्ष करना बहुत मुश्किल दिखाई देता है। जो इस कहानी के एक अंश में दिखाई देता है। "नत्थू और कलबत्ती कुम्हारी ने इस बार पहले से ही हिसाब लगा लिया कि अबकी बार कम-से-कम दस ब्याह तो आएँगे ही उनके पास। वैसे अशरफी के पोते का ब्याह तो कहीं गया नहीं, बल्कि चूल्हा न्यौत होगा इस बार भी।

कलबत्ती मन-ही-मन हिसाब लगा लेती है और पुलकित हो उठती है कि इस बार कोई भी ऐसा ब्याह नहीं है जहाँ से इक्यावन से कम मिलेंगे। और अशरूफी, उसकी बात और है। वह जो भी देगी सहर्ष स्वीकार कर लेगी जैसा अशरफी का पोता, वैसा ही कलबत्ती का। दोनों की दाँत काटी रोटी है। इसलिए ऐसा कोई भी तीज-त्यौहार या ईद-बकरीद खाली नहीं जाती होगी, जब कलवत्ती के यहाँ से अशरफी के घर मलीदा या पुआ-पूरी न जाती हों और अशरूफी के यहाँ से सूखा हलवा, सेंवई या जर्दा न जाता हो।"[7] मोरवाल की हर कहानी में सामाजिक संघर्ष दिखाया देता है। भूकम्प, आप्रवासी ,रंग अबीर ,मुस्कराहट लौट आई, अभी 'मैं जिन्दा हूँ' आदि कहानियां सामाजिक संघर्ष पर आधारित हैं।

भगवानदास मोरवाल की कहानी 'सिला हुआ आदमी' भी सामाजिक संघर्ष से परिपूर्ण है। समाज में जीने के लिए न जाने कितनी ही कुर्बानियां व्यक्ति को देनी पड़ती हैं। इतना ही नहीं कभी-कभी अपने और अपने परिवार जनों की जान भी गवांनी पड़ती है। 'सिला हुआ आदमी' मोरवाल की ऐसी ही कहानियों में से एक है। रामधन और रामरती के जीवन में ऐसी ही घटना जीवन को चलाने के लिए घटी कि उसके बच्चे की मौत हो जाती है। भारत ऐसे ही कितने ही परिवार है जो हाशिए पर चले जाते हैं।

निष्कर्षत: भगवानदास मोरवाल की कहानियों में सामाजिक संघर्ष बख़ूबी दिखाई देता है। भगवानदास मोरवाल को समकालीन हिंदी कथा-साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर के रूप में देखा जा सकता है। इनकी कहानियां समकालीन बोध और चेतना से परिपूर्ण हैं। स्त्री के हाशिए पर चले जाने की पीड़ा उनकी कहानियों में दिखाई देती है। देश की स्वतंत्रता के बाद हरियाणा के मेव समुदायों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संघर्ष इनकी कहानियों में एक पीड़ा के रूप में नज़र आती है।

संदर्भ-ग्रंथ

1. https://www.apnimaati.com/2021/11/blog-post48.html
2. मीणा, हरिराम, हाशिए का समाज और राज, जनसत्ता, 11 मार्च 2013
3. प्रधान संपादक -शभुनाथ, हिंदी साहित्य ज्ञानकोश (खंड-7), वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-2019, पृष्ठ संख्या-4385
4. मोरवालभगवानदास, महराब और अन्य कहानियां, किताब के फ्लैप से ,
5. वही
6. मोरवाल-.भगवानदास, महराब और अन्य कहानियां, हंस प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं ,2021 पृष्ठ-.सं .16
7. मोरवाल-.भगवानदास, महराब और अन्य कहानियां, हंस प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं ,2021 पृष्ठ-.सं .45